अलंकार

परिभाषा

अलंकार का सामान्य अर्थ है - आभूषण।
जिस प्रकार अलंकारों (आभूषणों) के प्रयोग से नारी के सौंदर्य में वृद्धि हो जाती है, उसी प्रकार अलंकारों के प्रयोग से काव्य के सौंदर्य में वृद्धि हो जाती है।

अलंकार के भेद

शब्द और अर्थ की दृष्टि से अलंकार के दो भेद होते हैं।

1 शब्दालंकार

2 अर्थालंकार

शब्दालंकार

जब किसी शब्द विशेष के प्रयोग से काव्य में सुंदरता आ जाती है, तो वहाँ पर शब्दालंकार होता है।

शब्दालंकार के भेद

शब्दालंकार के मुख्य रूप से तीन भेद होते हैं।

1 अनुप्रास अलंकार
2 यमक अलंकार
3 श्लेष अलंकार

अनुप्रास अलंकार

जब काव्य में किसी वर्ण की एक से अधिक बार आवृत्ति होती है, तो वहाँ पर अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे--

1 तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

यहाँ पर ‘त’ वर्ण की आवृत्ति बार -बार हुई है।

2 मुदित महीपति मंदिर आए।

यहाँ पर ‘म’ वर्ण की आवृत्ति बार -बार हुई है।

अतः दोनों पंक्तियों मेंअनुप्रास अलंकार है।

यमक अलंकार

यमक अलंकार -जब काव्य में किसी शब्द की आवृत्ति एक से अधिक बार हो, किन्तु उन शब्दों के अर्थ अलग -अलग हो तो वहाँ पर यमक अलंकार होता है ;जैसे -

1 कनक - कनक से सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाए बौराए नर , वा पाए बौराए।।

इन पंक्तियों में 'कनक' शब्द दो बार प्रयुक्त हुआ है, परन्तु दोनों बार अर्थ भिन्न है। एक कनक का अर्थ धतूरा (एक नशीला पदार्थ) है, तो दूसरे कनक का अर्थ सोना (एक बहुमूल्य धातु) है।

2 तीन बेर खाती थी अब तीन बेर खाती है।
यहाँ तीन बेर शब्द दो बार प्रयुक्त हुआ है। जिसका अर्थ है
तीन बार और तीन बेर (एक फल विशेष)

श्लेष अलंकार

श्लेष अलंकार - काव्य में प्रयुक्त एक शब्द के जब एक से अधिक अर्थ हों अर्थात एक ही शब्द कई अर्थों का बोध कराए तो वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है।

जैसे-

1- मेरी भव बाधा हरो राधा नागर सोय।
जा तन की झाई परै स्याम हरित दुति होय।।

यहाँ एक ही शब्द स्याम के दो अर्थ हैं।
1 श्री कृष्ण 2 साँवला

ऐसे ही एक ही शब्द हरित के भी दो अर्थ हैं।
1 प्रसन्न 2 हरा रंग

2 - जो रहीम गति दीप की ,कुल कपूत की होय।
बारै उजियारो करै ,बढ़ै अँधेरो होय।।

यहाँ एक ही शब्द बारै के दो अर्थ हैं।
1 एक बचपन 2 जलाने पर

ऐसे ही एक ही शब्द बढ़ै के दो अर्थ हैं।
1 बढ़ने पर 2 बुझने पर

अर्थालंकार

जब काव्य में अर्थ के कारण सौंदर्य वृद्धि होती है तो वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकार के प्रमुख भेद -

1 उपमा लंकार

2 रूपक अलंकार

3 उत्प्रेक्षा अलंकार

4 अन्योक्ति अलंकार

5 अतिश्योक्ति अलंकार

6 मानवीकरण अलंकार

7 पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

उपमा अलंकार

जब किसी प्रस्तुत वस्तु (उपमेय) की तुलना किसी अप्रस्तुत वस्तु (उपमान) से की जाती है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा अलंकार के अंग-

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं।

1 उपमेय (प्रस्तुत वस्तु) 2 उपमान (अप्रस्तुत वस्तु)

3 वाचक शब्द (उपमेय की उपमान से तुलना करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाए।)

4 साधारण धर्म (उपमेय और उपमान की समानता जिस शब्द से बताई जाती है।)

उपमा अलंकार के उदाहरण-

'सीता का मुख चंद्र के समान सुन्दर है।'

यहाँ सीता के मुख की तुलना चंद्र से की जा रही है।

यहाँ सीता का मुख -उपमेय है. चंद्र उपमान है।

'समान' वाचक शब्द है। 'सुंदर'- साधारण धर्म है।

उपमा अलंकार के उदाहरण-

'पीपर पात सरिस मन डोला'

'मन' -	उपमेय
'पीपर पात'-	उपमान
'सरिस' -	वाचक शब्द
'डोला' -	साधारण धर्म

उपमा अलंकार की पहचान-

जहाँ वाचक शब्द

सा,सी,से,सम,सदृश,समान,ज्यों,शब्द आएँ वहाँ

उपमा अलंकार होता है।

रूपक अलंकार

जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद रूप आरोप हो वहाँ रूपक अलंकार होता है।

विशेष-उपमेय और उपमान में गुण धर्म के अनुसार इतनी समानता होती है कि दोनों में कोई भेद प्रतीत नहीं होता।

जैसे-

रूपक अलंकार के उदाहरण

‘चरण -कमल बंदौ हरिराई।’

यहाँ उपमेय ‘चरण’ पर उपमान ‘कमल’ का अभेद रूप आरोप है।

‘मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों।’

यहाँ उपमेय ‘चंद्र’ पर उपमान ‘खिलौना’ का अभेद रूप आरोप है।

उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ उपमेय पर उपमान का भेद रूप आरोप होता है। अर्थात उपमेय को उपमान जैसा मान लिया जाता है।

सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलौने गात।

मनो नीलमणि सैल पर आतप परयौ प्रभात। ।

यहाँ उपमेय पीत-पट पर प्रभात के समय नीलमणि पर्वत पर पड़ने वाले 'आतप' उपमान से समानता की संभावना की गई है। पहचान शब्द -मानो, मनहुँ,जानो,जनहुँ,ज्यों,जनु आदि

अन्योक्ति अलंकार

जहाँ उपमेय के बहाने उपमान के बारे में कुछ कहा जाए।

नहिं पराग नहिं मधुर-मधु,नहिं विकास एहिं काल।

अली कली सौ बिन्धौ, आगे कौन हवाल। ।

यहाँ उपमान कली में बंद भ्रमर (अलि) के बहाने प्रस्तुत

(उपमेय) राजा (राजा जय सिंह) के बारे में कहा गया है।

अतिश्योक्ति लंकार

जहाँ किसी बात को इतना बढ़ा -चढ़ा कर कहा जाए कि जिसका होना किसी भी सामान्य या असामान्य परिस्थिति में संभव न हो।

अतिश्योक्ति अलंकार

जैसे - हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
सारी लंका जल गई ,गए निशाचर भाग।।

यहाँ हनुमान की पूँछ में अभी आग लगा भी नहीं पाए थे कि उससे पहले ही लंका का जल जाना दिखाया गया है। अतः अतिश्योक्ति अलंकार है।

अतिश्योक्ति अलंकार

देखि सुदामा की दिन -दशा, करुणा करके करूणानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुऔ नहिं, नैनन के जल सौं पग धोए। ।

यहाँ आँखों से अनपेक्षित आँसुओं को अविरल धारा के रूप में प्रस्तुत किया है।
जिसके कारण सुदामा के पैर धोने के लिए अन्य जल की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। अतः अतिश्योक्ति अलंकार है।

मानवीकरण अलंकार

जहाँ जड़ पदार्थों पर मानवीय भावनाओं का आरोप होता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। जैसे

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है।
वह संध्या सुंदरी परी -सी
धीरे -धीरे धीरे।

यहाँ संध्या को परी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मानवीकरण अलंकार

उषा सुनहरे तीर बरसती
जय लक्ष्मी सी उदित हुई।

यहाँ उषा को सुनहरे तीर बरसाती हुई नायिका के रूप में दिखाया गया है। अतः मानवीकरण अलंकार है।

पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

जहाँ किसी शब्द की एक से अधिक बार आवृत्ति होती है, किन्तु अर्थ एक ही रहता है, तो वहाँ पर पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार होता है।

बार -बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी।

यहाँ एक ही अर्थ में 'बार-बार' शब्द की आवृत्ति हुई है।

यमक और श्लेष में अंतर

यमक -एक शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त होता है और उसके अर्थ अलग -अलग होते हैं।

कनक-कनक ते सौ गुना ----

कनक-सोना

कनक-धतूरा

श्लेष -किसी एक ही शब्द के अर्थ अलग-अलग होते हैं।

मंगन को देख पट देत बार-बार

पट के दो अर्थ वस्त्र,कपाट

उपमा और रूपक में अंतर

उपमा -उपमेय और उपमान में किसी वाचक शब्द से समानता दिखाई जाती है ;जैसे

पीपर पात सरिस मन डोला

रूपक -उपमेय और उपमान में अभेद रूप आरोप होता है। वाचक शब्द का प्रयोग नहीं होता;जैसे

चरण- कमल बन्दौ हरिराई।

समाप्त

धन्यवाद